

मुकदमों का विवरण

राजेश और ए. एन. आर. वी.

मध्य प्रदेश राज्य (आपराधिक अपील सं.793-794 2022 का) 21 सितंबर, 2023

[बी. आर. गवई, जे. बी. पारदीवाला और संजय कुमार, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय:परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित एक मामले में क्योंकि अपहरण और हत्या का कोई चश्मदीद गवाह नहीं था, और जहां अभियोजन पक्ष का मामला अनिवार्य रूप से अपीलार्थी-दोषियों के कहने पर की गई 'बरामदगी' पर आधारित था, कथित रूप से यू/एस।27, साक्ष्य अधिनियम, क्या अलग-अलग मामलों में उनकी दोषसिद्धि और तीन में से दो अपीलार्थियों को दी गई मौत की सजा को न्यायसंगत ठहराया गया था, जब स्वीकारोक्ति उनकी गिरफ्तारी से पहले और 'किसी भी अपराध का आरोपी' होने से पहले की गई थी।

साक्ष्य अधिनियम, **1872-ss.26, 27** - 'पुलिस अधिकारी की अभिरक्षा' में होना और 'अपराध का आरोपी' होना-पुलिस को दिए गए स्वीकारोक्ति को सीमित सीमा तक स्वीकार्य बनाने के लिए पूर्व-आवश्यकताएं, अपवाद यू/एस को लागू करके।**27:**

आयोजित किया गया:धारा 26 में प्रावधान है कि किसी भी व्यक्ति द्वारा पुलिस अधिकारी की हिरासत में रहते हुए की गई कोई भी स्वीकारोक्ति ऐसे व्यक्ति के खिलाफ तब तक साबित नहीं की जाएगी, जब तक कि मजिस्ट्रेट की तत्काल उपस्थिति में नहीं की जाती -एस. 27 एस. के अपवाद की प्रकृति में है।26 – यह यू/एस आवश्यक है।27 कि संबंधित व्यक्ति पर 'अनाचार का आरोप' लगाया जाना चाहिए और 'पुलिस अधिकारी की अभिरक्षा' में होने के कारण, उसे किसी तथ्य का पता लगाने के लिए जानकारी देनी चाहिए और उस जानकारी का इतना हिस्सा, चाहे वह स्वीकारोक्ति के बराबर हो या नहीं, जो स्पष्ट रूप से खोजे गए तथ्य से संबंधित है, उसके खिलाफ साबित किया जा सकता है-दोनों पहलू, अर्थात् 'पुलिस अधिकारी की अभिरक्षा में होना' और 'अनाचार का आरोपी होना', पुलिस को दिए गए स्वीकारोक्ति को सीमित सीमा तक स्वीकार्य बनाने के लिए अनिवार्य पूर्व-आवश्यकताएं हैं।27 – वर्तमान मामले में, हालांकि एक अपीलार्थी को पुलिस स्टेशन ले जाया गया था, चाहे वह 2 पर हो।

1

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

29.03.2013 या इससे पहले भी, उन्हें 'पुलिस हिरासत' में नहीं कहा जा सकता था जब तक कि उन्हें 18 साल की उम्र में गिरफ्तार नहीं किया गया था:30 <आई. डी. 1] पर घंटे, क्योंकि उन्होंने एफ. आई. आर. में एक 'आरोपी' के रूप में दावा नहीं किया था और उनकी गिरफ्तारी तक 'किसी

भी अपराध का आरोपी' नहीं था-इसलिए, यह उनकी गिरफ्तारी थी जिसके परिणामस्वरूप वास्तविक 'पुलिस हिरासत' हुई, और इस तरह की गिरफ्तारी से पहले और 'किसी भी अपराध का आरोपी' होने से पहले उनके द्वारा की गई स्वीकारोक्ति को सीधे एस. द्वारा मारा जाएगा।²⁶ और यू/एस अपवाद को लागू करने की कोई संभावना नहीं है।²⁷ इस तरह के कबूलनामे के दौरान उसके द्वारा दी गई किसी भी जानकारी के लिए, भले ही इससे कोई तथ्य का पता चला हो-इस प्रकार, मृत शरीर, हत्या के हथियार और अन्य भौतिक वस्तुओं की कथित खोज, भले ही वह उसके इशारे पर हो, उसके खिलाफ साबित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि उस पर 'किसी भी अपराध का आरोप' नहीं था और जब उसने कथित रूप से स्वीकारोक्ति की थी, तब वह 'पुलिस हिरासत' में नहीं था- इसी तरह, अन्य दो अपीलकर्ताओं को भी प्राथमिकी में 'आरोपी' के रूप में नामित नहीं किया गया था और जब तक कि उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया था और 'पुलिस हिरासत' में नहीं लिया गया था, तब तक 'किसी भी अपराध का आरोप' नहीं लगाया गया था।^{302, 364 ए, 120 बी, 201. [पैरा 22, 27 और 39]}

आपराधिक कानून-जांच-पंचनामा और ज्ञापन:

आयोजित किया गया:वर्तमान मामले में, जिस तरीके और तरीके से पंचनामे और ज्ञापन तैयार किए गए थे, वह अभियोजन पक्ष को उच्च और शुष्क छोड़ देता है-पंचनामों और जब्ती के गवाहों ने दस्तावेजों के लिए केवल प्रमाणक के रूप में काम किया और अपने शब्दों में खुलासा नहीं किया कि इन वस्तुओं की खोज कैसे की गई, यानी किसके कहने पर और कैसे-इन सभी साक्ष्यों के संग्रह के संदर्भ में पुलिस द्वारा दर्ज की गई इन कार्यवाही से कोई वैध वैधता नहीं जुड़ी है-दंड प्रक्रिया संहिता, 1973।[पैरा 31, 32] 3

राजेश और ए. एन. आर. वी.

साक्ष्य-डी. एन. ए. साक्ष्य-बाल, स्रोत और उत्पत्ति का संदेह-इन पर निर्भरता न होना:

आयोजित किया गया:वर्तमान मामले में, अभियोजन पक्ष द्वारा डी. एन. ए. साक्ष्य पर भी भरोसा किया गया था, एक परिदृश्य को पेश करते हुए कि मृतक अपने हमलावर के साथ संघर्ष कर रहा था और उस हाथापाई के दौरान, वह अपने हमलावर के सिर से कुछ बाल निकालने में कामयाब रहा और वे उसके हाथ में तब तक रहे जब तक कि उसके शरीर का पता नहीं चला-उस बाल के डी. एन. ए. विश्लेषण से साबित हुआ कि वे अपीलकर्ताओं में से एक, 'आर. वाई.' के थे-हालांकि, तथ्यों पर, यह कहानी तर्कहीन पाई गई है-इसके अलावा, इस बात पर संदेह है कि पुलिस द्वारा 'आर. वाई.' कब लिया गया था और जब वह अपने नियंत्रण में था तो क्या पुलिस द्वारा उसके बाल निकाले जा सकते थे, पुलिस द्वारा स्वयं इस तरह के साक्ष्य पेश किए जाने की संभावना है।, बाल को संदिग्ध माना जाता है, उस डी. एन. ए. विश्लेषण का अंतिम परिणाम अभियोजन पक्ष के मामले को स्थापित करने में कोई वास्तविक उद्देश्य पूरा नहीं करता है।[पैरा 33]

आपराधिक कानून-पुलिस जांच-निराशाजनक मानक, चिंता के साथ नोट किए गए-डॉ. न्यायमूर्ति वी. एस. मल्लिक की 'आपराधिक न्याय प्रणाली के सुधारों पर समिति'; भारतीय विधि आयोग की रिपोर्ट **No.239**-चर्चा की गई।

शहरों और
अन्य संदर्भों
की सूची

सी. चेंगा रेड्डी और अन्य बनाम एपी राज्य [1996] 3 सप्लीमेंट।एससीआर 479:(1996) 10 एससीसी 193; रामरेड्डी राजेश खन्ना रेड्डी बनाम राज्य

ए. पी. [2006] 3 एस. सी. आर. 348:(2006) 10 एस. सी. सी. 172; मजेंद्रन लंगेश्वरन

बनाम राज्य (दिल्ली का राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) और एक अन्य [2013] 10 एस. सी. आर. 907:(2013) 7 एस. सी. सी. 192; शरद बर्हीचंद सारदा बनाम महाराष्ट्र राज्य [1985] 1 एस. सी. आर. 88:(1984) 4 एस. सी. सी. 116; हनुमंत बनाम मध्य प्रदेश राज्य (1952) 2 एस. सी. सी. 71; पदला वीरा रेड्डी बनाम आंध्र प्रदेश राज्य और अन्य 1989 पूरक (2) एस. सी. सी. 706; बोधराज उर्फ बोधा और अन्य बनाम जम्मू राज्य और

कश्मीर [2002] 2 पूरक।एससीआर 67:(2002) 8 एस. सी. सी. 45; कर्नाटक राज्य बनाम डेविड रोजारियो और एक अन्य [2002] 2 सप्लीमेंट।एस. सी. आर. 419:(2002) 7 एससीसी

728; आशीष जैन बनाम मकरंद सिंह और अन्य [2019] 1 एससीआर 345:(2019) 3 एस. सी. सी. 770; बॉबी बनाम केरल राज्य आपराधिक अपील सं. 2009 का 1439,12.01.2023 पर निर्णय लिया गया; याकूब अब्दुल रज़ाक मेमन बनाम महाराष्ट्र राज्य सी. बी. आई. के माध्यम से, बॉम्बे [2013] 15 एस. सी. आर. 1:(2013) 13 एस. सी. सी. 1; रामानंद @

मध्य प्रदेश राज्य 4 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 15 एस. सी. आर.

नंदलाल भारती बनाम। उत्तर प्रदेश राज्य आपराधिक अपील सं. 64-65

2022, 13.10.2022 पर तय किया गया:2022 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 1396; खेत सिंह बनाम भारत संघ 2 एस. सी. आर. 598:(2002) 4 एस. सी. सी. 380; मनोज और अन्य बनाम मध्य प्रदेश राज्य (2023) 2 एस. सी. सी. 353 पर भरोसा किया।

पुलुकुरी कोटय्या बनाम राजा सम्राट आकाशवाणी 1947 प्रिवी काउंसिल 67 -

संदर्भित किया गया।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2022 की आपराधिक अपील संख्या 793-794।

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के दिनांक 10.08.2017 के निर्णय और आदेश से, 2017 के Cr.RFC नंबर 1 और CrI.A में जबलपुर में प्रधान सीट।

के साथ

2022 की आपराधिक अपील No.795।

रूप:

सिद्धार्थ लूथरा, वरिष्ठ अधिवक्ता, सुश्री सुप्रिया जुनेजा, आदित्य सिंगला, भावेश सेठ, शक्ति सिंह, आयुष अग्रवाल, आयुष अग्रवाल, उदभव सिन्हा, अधिवक्ता।अपीलार्थियों के लिए।

श्रीयश उदय ललित, पशुपति नाथ राजदान, अभिनव अग्रवाल, कृष्णगोपाल अभय, सुश्री रुनझुन गर्ग, सुश्री मैत्रेयी जगत जोशी, आस्तिक गुप्ता, सुश्री आयुषी मित्तल, कुलदिप कुमार शुक्ला, विपुल अभिषेक, अधिवक्ता।उत्तरदाता के लिए।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का निर्णय/आदेश

संजय कुमार, जे।

1. जुलाई, 2013 के अंतिम सप्ताह में 15 वर्षीय लड़के अजीत पाल @बॉबी की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी।एक पड़ोसी, ओम प्रकाश यादव, अपने भाई, राजा यादव और बेटे, राजेश उर्फ राकेश यादव के साथ, अजीत पाल की हत्या के लिए 2013 के सत्र मामले संख्या 560 में मुकदमा चला और उसे बंद कर दिया।उसमें पारित दिनांक 29.12.2016 के निर्णय द्वारा, विद्वान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, 5

राजेश और ए. एन. आर. वी.मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 6

मध्य प्रदेश के जबलपुर ने तीनों को अलग-अलग मामलों में दोषी ठहराया।ओम प्रकाश यादव को आई. पी. सी. की धारा 120 बी के साथ धारा 364 ए के तहत दोषी ठहराया गया था, जबकि राजा यादव और राजेश यादव को आई. पी. सी. की धारा 120 बी, आई. पी. सी. की धारा 120 बी के साथ धारा 364 ए और आई. पी. सी. की धारा 201 के तहत दोषी ठहराया गया था। उन तीनों के खिलाफ उसी दिन सजा सुनाई गई थी।ओम प्रकाश यादव को ₹2,000/- का भुगतान करने में विफल रहने पर दो महीने के डिफॉल्ट कारावास के साथ आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।राजा यादव और राजेश यादव को आई. पी. सी. की धारा 302 और 364 ए के तहत मृत्युदंड और दो-दो महीने के डिफॉल्ट कारावास की सजा सुनाई गई, यदि वे व्यक्तिगत रूप से क्रमशः ₹1,000 और ₹1,000 की राशि का भुगतान करने में विफल रहे।उन दोनों को आई. पी. सी. की धारा 201 के तहत एक महीने के डिफॉल्ट कारावास के साथ पांच साल के कठोर कारावास और प्रत्येक को 500/- रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई थी।

2. इससे आहत होकर तीनों दोषियों ने मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में याचिका दायर की। उनकी अपीलों को मौत की सजा के आलोक में सत्र न्यायालय से प्राप्त 'संदर्भ (2017 का सी. आर. आर. एफ. सी.-1)' के साथ जोड़ा गया था। 2017 की आपराधिक अपील संख्या 83, ओम प्रकाश यादव के नेतृत्व में, और 2017 की आपराधिक अपील संख्या 84, राजेश यादव और राजा यादव के नेतृत्व में, 'संदर्भ में (2017 का सी. आर. आर. एफ. सी.-1)' के साथ, मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की एक खंड पीठ ने उनकी दोषसिद्धि और सजा को स्वीकार किया, जिसमें राजा यादव और राजेश यादव को दी गई मौत की सजा भी शामिल है।

3. इस फैसले को स्वीकार करते हुए, तीनों दोषी विशेष अनुमति द्वारा इन अपीलों के माध्यम से इस अदालत के समक्ष हैं। 2017 की आपराधिक अपील संख्या 84 के संदर्भ में 2022 की आपराधिक अपील संख्या 793 का नेतृत्व राजेश यादव और राजा यादव ने किया था, जबकि 2022 की आपराधिक अपील संख्या 794 का नेतृत्व उन्होंने 'संदर्भ में (2017 का सी. आर. आर. एफ. सी.-1)' के संबंध में किया था। 2017 की आपराधिक अपील संख्या 795 को 2017 की आपराधिक अपील संख्या 83 को खारिज करने के खिलाफ ओम प्रकाश यादव के नेतृत्व में दायर किया गया था।

4. अपना मामला स्थापित करने के लिए, अभियोजन पक्ष ने निचली अदालत के समक्ष 17 गवाहों से पूछताछ की थी और 45 गवाहों को पेश किया था। बचाव पक्ष ने 3 गवाहों से पूछताछ की और 14 साक्ष्य प्रस्तुत किए।

5. संक्षेप में, अभियोजन पक्ष का मामला इस प्रकार है: राजवंत कौर (पीडब्लू -1), अजीत पाल की माँ, की बिक्री पर एक बड़ी राशि प्राप्त की

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

उसके पिता की कुछ संपत्ति। यह बिक्री 22.03.2013 पर की गई थी, लेकिन इससे पहले, उन्हें नकद में 10 लाख रुपये की राशि प्राप्त हुई थी। बिक्री विलेख के पंजीकरण की तारीख को, उसके पिता के नाम पर ₹27.5 लाख की राशि चेक द्वारा प्राप्त हुई थी। शेष राशि भी उसी दिन नकद में प्राप्त हुई थी। उनके द्वारा प्राप्त 10 लाख रुपये में से, पीडब्लू-1 ने 9 लाख रुपये के लिए एक वित्तीय जमा राशि बनाई और 1 लाख रुपये उनके खाते में रखे गए। यह जानकारी एक पड़ोसी ओम प्रकाश यादव और उनके पूरे परिवार को थी। जबकि, 26.03.2013 पर, पीडब्लू-1 का बेटा, अजीत पाल, 'होलिका' देखने के लिए रात 9 बजे घर से निकला और वापस नहीं आया। पीडब्लू-1 ने 'लापता व्यक्ति' की रिपोर्ट दर्ज कराई (उदा. पी1) गोरखपुर पुलिस स्टेशन में 16 बजे 27.03.2013 पर: 15 घंटे। आईडी1 पर पीडब्लू-1 के भाई अमरजीत सिंह उर्फ मिट्टू (पीडब्लू-2) और ओम प्रकाश यादव लड़के की तलाश में ग्वारीघाट के गुरुद्वारे गए। उन्होंने वहां उसकी पहचान नहीं की, लेकिन जब वे लौट रहे थे, तब पीडब्लू-2 को उसके मोबाइल फोन पर मोबाइल नंबर 8305620342 से कॉल आया। फोन करने वाले ने कहा- "मैं खान बोल रहा हूँ, बॉबी मेरे साथ है। मुझे 50 लाख रुपये भेजें।"

पीडब्लू-2 उसे यह बताने के लिए पीडब्लू-1 के पास गया और उसी समय उसी नंबर से उसके मोबाइल फोन पर एक और कॉल आया। पीडब्लू-2 ने पीडब्लू-1 को फोन दिया और फोन करने वाले ने कहा, "मैं खान बोल रहा हूँ। आपका बॉबी मेरे साथ है। 50 लाख रुपये भेजें और अगर आप पुलिस या किसी अन्य व्यक्ति को बताते हैं तो मैं बॉबी का गला काट दूंगा और उसे मार दूंगा।" पीडब्लू-1 ने उसे ऐसा न करने के लिए कहा और अपने बच्चे से बात करने के लिए कहा। फिर उसने एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी: "माँ, मुझे बचाओ, माँ, मुझे बचाओ, मैं बॉबी हूँ।" पीडब्लू-1 ने कहा कि बॉबी की आवाज़ सुनकर वह नीचे गिर गई और उसके हाथ से मोबाइल गिर गया। ओम प्रकाश यादव ने फोन उठाया और फोन करने वाले से बात करने लगे। उन्होंने कहा, "हमें जल्दी से बताएं कि पैसा कहां से मिलेगा और मुझे (एस. आई. सी.) दीदी के साथ पैसा मिल रहा है।" फिर, एक अन्य पड़ोसी मोनू गुजराल (पीडब्लू-10) ने फोन लिया लेकिन उसे काट दिया गया। पीडब्लू-10 ने फिर उसी नंबर पर अपहरणकर्ता को कॉल करने के लिए अपने फोन का इस्तेमाल किया और बॉबी से बात करने के लिए कहा। जब अपहरणकर्ता ने उसे ऐसा करने दिया, तो पीडब्लू-10 ने पीडब्लू-1 को बताया कि यह बॉबी की आवाज़ नहीं थी। फिर, फोन करने वाले ने पीडब्लू-10 से कहा कि बॉबी ने उसे बताया था कि उसकी माँ के पास तुरंत भेजने के लिए 3 लाख रुपये हैं और शेष 20 लाख रुपये 1 महीने में दिए जा सकते हैं।

6. ओम प्रकाश यादव ने पीडब्लू-1 पर 1 लाख रुपये की व्यवस्था करने और शेष 20 लाख रुपये बैंक से निकालने के लिए दबाव डाला। हालाँकि, पीडब्लू-1 ओम प्रकाश यादव को 1 लाख रुपये नहीं दे सका क्योंकि उनके घर में रिश्तेदार थे। पीडब्लू-10 ने वह मोबाइल नंबर लिख लिया जिससे अपहरणकर्ता के पास 7 थे

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 8

बुलाया गया, अर्थात्, 8305620342, कागज के एक टुकड़े पर और उसे पीडब्लू-1 को दे दिया। उसने उक्त नंबर पुलिस को दे दिया। जब वह पुलिस स्टेशन से वापस आई, तो ओम प्रकाश यादव उसके पास आया और उससे कहा कि वह पुलिस को कुछ न बताए और बॉबी आधी रात तक रिहा हो जाएगा। बाद में, राजा यादव रात में लगभग 11 बजे पीडब्लू-1 के घर आया और उसे बताया कि उसके भाई पीडब्लू-2 और उसके दूसरे भाई मेजर सिंह ने पैसे के लालच में उसके बेटे का अपहरण कर लिया था। राजा यादव के हाथ में तलवार थी और उसने पीडब्लू-1 से कहा कि अगर वह कहेगी तो वह उसके भाइयों के गले काट देगा। पीडब्लू-1 ने उसे ऐसा कोई काम नहीं करने के लिए कहा क्योंकि उसके भाई ऐसा कुछ नहीं करेंगे।

7. 28.03.2013 पर लगभग 3 बजे:30 दोपहर में, फिरौती कॉल के आधार पर, पीडब्लू-2 एफआई ने गोरखपुर पुलिस स्टेशन में एक रिपोर्ट का नेतृत्व किया। उस आधार पर, एफ. आई. आर. सं. 273/13 (उदा. पी35) 18 पर पंजीकृत किया गया था: 20 आई. पी. सी. की धारा 364 ए और 365 के तहत अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ घंटे। जाँच अधिकारी (पीडब्लू-16) द्वारा साइबर सेल से मोबाइल नंबर 8305620342 के लिए कॉल विवरण और आई. एम. ई. आई. डेटा प्राप्त किया गया था, जिससे फिरौती कॉल किए गए थे। पी. डब्ल्यू.-16 को साइबर सेल द्वारा सूचित किया गया कि

आई. एम. ई. आई. नंबर 358327028551270 वाले मोबाइल फोन हैंडसेट का उपयोग फिरौती कॉल करने के लिए किया गया था और इस आई. एम. ई. आई. नंबर वाले हैंडसेट का उपयोग मोबाइल नंबर 9993135127 के साथ भी किया गया था, जो ओम प्रकाश यादव को जारी किया गया था। यह जानकारी मिलने पर पीडब्लू-16 नर्मदा नगर, ग्वारीघाट में ओम प्रकाश यादव के घर आई. डी. 1 पर गया। पीडब्लू-16 राजेश यादव को पुलिस स्टेशन ले गया और 13 बजे उससे पूछताछ की। 45 घंटे, जिसके बाद उसने राजा यादव के साथ अजीत पाल की हत्या करने की बात कबूल की। पीडब्लू-16 ने एक ज्ञापन (उदा. पी8) में राजेश यादव का इकबालिया बयान है, जिसमें उसने यह भी कहा है कि वह अजीत पाल के शरीर और हत्या के हथियार को बरामद करने में मदद करेगा। राजेश यादव और पीडब्लू-16 गवाहों के साथ नर्मदा नगर गए। राजेश यादव उन्हें खंडारी नहर के पास एक कुएं तक ले गए। अजीत पाल का शव कुएं में मिला था। यह एक सफेद प्लास्टिक की बोरी में भरा हुआ था। उपस्थित गवाहों द्वारा शव की पहचान अजीत पाल के रूप में की गई थी। अजीत पाल का गला काट दिया गया था और उनके दाहिने हाथ की अंगुली में बाल उलझ गए थे। पुलिस ने एक पंचायतनामा तैयार किया (उदा. पी2)। इसमें पीडब्लू-2 के हस्ताक्षर हैं। नक्ष पंचायतनामा (उदा. पी3) पर भी पीडब्लू-2 द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। राजेश यादव ने कुछ दूरी पर पड़ी शराब की एक खाली बोतल की ओर इशारा किया। उसी को एक संपत्ति जब्ती ज्ञापन (एक्स। पी10)। राजेश यादव के कहने पर एक लोहे का चाकू भी जब्त किया गया।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

नहर से। चाकू पर खून जैसे धब्बे थे। यह जब्ती गवाहों की उपस्थिति में संपत्ति जब्ती ज्ञापन (एक्स. पी11)। राजेश यादव को तब 18 बजे 29.03.2013 पर गिरफ्तार किया गया था: 30 गिरफ्तारी ज्ञापन के तहत घंटे (उदा. पी36)।

8. पीडब्लू-16 फिर से मोबाइल नंबर 8305620342 का सिम कार्ड खोजने के लिए 30.03.2013 पर राजेश यादव के घर गया, लेकिन वह नहीं मिला। Ex. पी37 इस संबंध में हाउस सर्च पंचनामा है। 31.03.2013 पर, गवाहों की उपस्थिति में गोरखपुर पुलिस स्टेशन में राजेश यादव से फिर से पूछताछ की गई और उनका बयान एक ज्ञापन (Ex. पी15)। उन्होंने कहा कि जिस मोबाइल फोन से फिरौती के लिए कॉल किए गए थे, वह उनके भाई बृजेश यादव के पास था और वह इसे बरामद करने में मदद करेंगे। 31.03.2013 पर, बृजेश यादव को गोरखपुर पुलिस स्टेशन ले जाया गया और गवाहों की उपस्थिति में पूछताछ की गई। उन्होंने एक बयान दिया, जिसे एक ज्ञापन में दर्ज किया गया (पूर्व। पी17), कि उसने अपने भाई राजेश यादव द्वारा दिए गए मोबाइल फोन को अपने कमरे में एक सूटकेस में छिपा दिया था। बृजेश पुलिस और गवाहों को घर ले गया और आई. एम. ई. आई. संख्या 358327028551278 और 358327028653272 के साथ एक डबल-सिम मोबाइल फोन हैंडसेट जब्त किया गया। माइक्रोमैक्स कंपनी का सिम नंबर 9993135127 और आई. एम. ई. आई. नंबर 910549001346373 और 910549001754378 वाला एक अन्य मोबाइल फोन भी जब्त किया गया। जब्त ज्ञापन पूर्व है। पी19।

9. 31.03.2015 पर 15 बजे:00 घंटों बाद, पीडब्लू-16 ने गवाहों की उपस्थिति में गोरखपुर पुलिस स्टेशन में राजा यादव से पूछताछ की। उसने कहा कि उसने घटना के समय उसके द्वारा पहने गए खून से सने कपड़ों को छिपा दिया था और उसे ठीक करने में मदद करेगा। इस कथन के आधार पर, एक ज्ञापन में दर्ज किया गया (उदा. पी16), राजा यादव पुलिस और गवाहों को नर्मदा नगर में अपनी डेयरी में ले गए, जहाँ उनके कपड़े, खून जैसे दाग के साथ, एक ज़ब्ती ज्ञापन (एक्स। पी18)। राजा यादव को 31.03.2013 पर गिरफ्तारी ज्ञापन (Ex. पी20) 17 बजे:40 घंटे।

10. ओम प्रकाश यादव को 05.04.2013 पर गोरखपुर पुलिस स्टेशन ले जाया गया और गवाहों की उपस्थिति में पूछताछ की गई। उन्होंने कहा कि घटना के समय राजेश यादव द्वारा पहने गए खून से सने कपड़ों को उन्होंने अपने घर के एक कमरे में किसी घास के नीचे एक प्लास्टिक की थैली में छिपा दिया था। यह बयान एक ज्ञापन में दर्ज किया गया था। पी22) और उस आधार पर, उनके घर के एक कमरे में घास के नीचे एक काली टी-शर्ट, एक काली फुल लोअर और एक हल्की हरी बरमूडा पाई गई। कपड़े 9

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 10

15 बजे जब्त किए गए: 15 जब्त ज्ञापन के तहत 05.04.2013 पर घंटे (उदा. पी23)। ओम प्रकाश यादव को 15 बजे 05.04.2013 पर गिरफ्तार किया गया था: 30 गिरफ्तारी ज्ञापन के तहत घंटे (उदा. पी24)।

11. मृतक के दाहिने हिस्से से जब्त किए गए बालों को डी. एन. ए. विश्लेषण और राजेश यादव और राजा यादव के रक्त के नमूनों से तुलना के लिए भेजा गया था। डीएनए परीक्षण रिपोर्ट से पता चला कि उक्त बाल राजेश यादव के थे। डॉ. विवेक श्रीवास्तव (पीडब्लू-7) ने शव का पोस्टमार्टम किया। उनकी पोस्टमार्टम रिपोर्ट (उदा. पी7) ने संकेत दिया कि मृत्यु परीक्षा से 3 से 5 दिन पहले हुई थी और मृत्यु का कारण रक्तस्रावी सदमा था जो मृत्यु से पहले गले को काटने के कारण हुआ था। उनके द्वारा 10 बजे पोस्टमार्टम किया गया था: 15 30.03.2013 पर घंटे।

12. अभियोजन पक्ष के अनुसार, राजा यादव ने आई. एम. ई. आई. नंबर 358327028551270 वाले ओम प्रकाश यादव के मोबाइल फोन हैंडसेट में मोबाइल नंबर 8305620342 वाला सिम कार्ड डाल कर फिरौती की कॉल की थी। इसके बाद उक्त सिम कार्ड को नष्ट कर दिया गया और मोबाइल नंबर 9993135127 वाला ओम प्रकाश यादव का सिम कार्ड हैंडसेट में डाल दिया गया। अभियोजन पक्ष के अनुसार, हालांकि फिरौती कॉल सुबह के समय 28.03.2013 पर किए गए थे, अजीत पाल को 26.03.2013 की रात को ही राजेश यादव और राजा यादव ने मार डाला था। उन्होंने उसे शराब पीने का लालच दिया, जिसके बाद राजा यादव और अजीत पाल ने व्हिस्की पी ली। इसके बाद राजा यादव ने अजीत पाल को पकड़ लिया और राजेश यादव ने उनका गला काट दिया। राजेश यादव ने फिर एक सफेद प्लास्टिक की बोरी ली और उन्होंने शव को कुएं में छिपा दिया। कुल मिलाकर यह अभियोजन पक्ष का मामला था।

13. तथ्यात्मक विवरण से अलग होने से पहले, हम ध्यान दे सकते हैं कि अभियोजन पक्ष ने पूरन सिंह (पीडब्लू-3) को एक गवाह के रूप में पेश करने की कोशिश की ताकि एक 'अंतिम बार देखे गए' सिद्धांत को मजबूत किया जा सके ताकि एक मजबूत मामला बनाया जा सके। इस गवाह ने कहा कि उनकी बेटी की शादी पीडब्लू-2 से हुई थी। उसने कहा कि वह आरोपी को भी जानता था। उसने दावा किया कि शाम 6 बजे वह अपनी बेटी को होली के लिए मिठाइयों का डिब्बा देने के लिए नर्मदा नगर गया था। उसने आगे कहा कि उसके घर से निकलने के बाद वह रेलवे क्रॉसिंग पर पहुंचा और राजा यादव, राजेश यादव और अजीत पाल से मिला। अजीत पाल ने उनका स्वागत किया और उन्होंने अजीत पाल से पूछा कि वह घर पर क्यों नहीं थे क्योंकि रात के 9 बज चुके थे। अजीत पाल ने उसे बताया कि वह 'होलिका' देखने जा रहा है और दूसरों के साथ चला गया। पीडब्लू-3 ने बताया कि इसके बाद वह घर गए और उनकी बेटी ने 28.03.2013 पर बताया कि अजीत पाल ने

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

अपहरण और फिरौती के लिए कॉल किए गए थे। <ID1] पर, उनकी बेटी ने उन्हें सूचित किया कि अजीत पाल का शव एक कुएं के अंदर मिला था और राजा यादव, राजेश यादव, बृजेश यादव और ओम प्रकाश यादव ने इसे बरामद करने में मदद की थी। पीडब्लू-3 ने कहा कि वह अजय पाल के अंतिम संस्कार के लिए आईडी2 पर गया था और जब वह क्रॉसिंग पर टाउन इंस्पेक्टर से मिला, तो उसने उसे बताया कि वह राजा यादव और राजेश यादव के साथ अजीत पाल से आईडी1 पर मिला था। पीडब्लू-3 के इस संस्करण को निचली अदालत ने स्वीकार कर लिया था लेकिन उच्च न्यायालय ने इस पर विश्वास नहीं किया था। अभियोजन पक्ष द्वारा निर्मित 'अंतिम बार देखा गया' सिद्धांत, इसलिए, जमीन पर गिर गया।

14. अभियोजन पक्ष के मामले के एक पर्यवेक्षक से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि यह पूरी तरह से परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित है क्योंकि अजीत पाल के अपहरण और हत्या का कोई चश्मदीद गवाह नहीं था। परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित एक मामले में, अभियोजन पक्ष को अभियुक्त के अपराध की ओर इशारा करते हुए अखंडित घटनाओं की एक श्रृंखला स्थापित करनी चाहिए और कोई अन्य नहीं [सी. चेंगा देखें]।

रेड्डी और अन्य बनाम एपी राज्य **1**, रामरेड्डी राजेश खन्ना रेड्डी बनाम एपी राज्य **2**, मजेंद्रन लंगेश्वरन बनाम राज्य (एन. सी. टी. दिल्ली) और अन्य **3** और शरद बर्धीचंद सारदा बनाम महाराष्ट्र राज्य **4**। बहुत पहले **1952** में, हनुमंत बनाम मध्य प्रदेश राज्य में **5**,

इस न्यायालय की 3-न्यायाधीशों की पीठ ने निम्नलिखित टिप्पणी की: 'यह अच्छी तरह से याद रखना चाहिए कि ऐसे मामलों में जहां साक्ष्य परिस्थितिजन्य प्रकृति का है, जिन परिस्थितियों से अपराध का निष्कर्ष निकाला जाना है, उन्हें पहली बार में पूरी तरह से स्थापित किया जाना चाहिए, और इस तरह से स्थापित सभी तथ्य केवल अभियुक्त के अपराध की परिकल्पना के अनुरूप होने चाहिए। एक बार फिर, परिस्थितियाँ निर्णायक प्रकृति और प्रवृत्ति की होनी चाहिए और वे ऐसी होनी

चाहिए कि हर परिकल्पना को बाहर कर दिया जाए, लेकिन जिसे साबित करने का प्रस्ताव है। दूसरे शब्दों में, अब तक सबूतों की एक श्रृंखला होनी चाहिए जो अभियुक्त की बेगुनाही के अनुरूप निष्कर्ष के लिए कोई उचित आधार नहीं छोड़ती है और यह ऐसा होना चाहिए जो यह दिखा सके कि सभी मानवीय संभावनाओं के भीतर कार्य अभियुक्त द्वारा किया गया होगा।'

1 (1996) 10 एससीसी 193 2 (2006) 10 एससीसी 172 3 (2013) 7 एससीसी 192 4 (1984) 4 एससीसी 116 5 (1952) 2 एससीसी 71 11

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 12

फिर से, पदाला वीरा रेड्डी बनाम आंध्र प्रदेश राज्य और

अन्य 6, इस न्यायालय ने कहा कि जब कोई मामला पूरी तरह से परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित होता है, तो ऐसे साक्ष्य को निम्नलिखित परीक्षणों को संतुष्ट करना चाहिए:

‘1. जिन परिस्थितियों से अपराध का अनुमान लगाने की कोशिश की जाती है, उन्हें स्पष्ट रूप से और तुरंत स्थापित किया जाना चाहिए।

2. उन परिस्थितियों में अभियुक्त के अपराध की ओर इशारा करने की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

3. संचयी रूप से ली गई परिस्थितियों को एक ऐसी श्रृंखला बनानी चाहिए जो इतनी पूर्ण हो कि इस निष्कर्ष से कोई बच न सके कि सभी मानवीय संभावनाओं के भीतर अपराध आरोपी द्वारा किया गया था और कोई और नहीं; और

4. दोषसिद्धि को बनाए रखने के लिए परिस्थितिजन्य साक्ष्य अभियुक्त के अपराध के अलावा किसी अन्य परिकल्पना की व्याख्या करने में पूर्ण और असमर्थ होना चाहिए और ऐसा साक्ष्य न केवल अभियुक्त के अपराध के अनुरूप होना चाहिए बल्कि उसकी निर्दोषता के साथ असंगत होना चाहिए।’

15. वर्तमान में इन मानकों को लागू करते हुए, हम समझते हैं कि अभियोजन पक्ष अपने मामले को स्थापित करने में पूरी तरह से विफल रहा। इस बात के सबूतों में अंतर है कि अभियोजन पक्ष ‘अपीलार्थियों के अपराध की ओर बिना किसी कारण के इंगित करने वाली अखंड श्रृंखला’ के रूप में कार्य करेगा। अभियोजन पक्ष के मामले में बहुत सारी विसंगतियां इसके कथित संस्करण के ताने-बाने को तोड़ देती हैं कि घटनाएँ कैसे सामने आईं। अक्सर, अदालतें यह मानती हैं कि पुलिस की ओर से उचित प्रक्रियाओं और प्रथाओं के प्रति कम सम्मान के साथ लापरवाही से अति उत्साह और बेलगाम उत्साह, जिन्हें वे दोषी पक्ष मानते हैं, उन्हें पकड़ने और फिर उनके खिलाफ मामला बनाने में, सबूतों की श्रृंखला में अंतर और कमजोर लिंक को उजागर करके, जो वे हासिल करना चाहते हैं, उसके सीधे विपरीत पूरा करते हैं, कि वे अंततः गलती करते हैं, जैसा कि अब स्थिति है।

16. शुरुआत में, अजीत पाल के लापता होने के समय के बारे में कोई स्पष्टता नहीं है। Ex. पी1, राजवंत कौर (पीडब्लू-1) द्वारा दर्ज की गई ‘लापता व्यक्ति’ रिपोर्ट होने के कारण, दर्ज किया गया कि अजीत पाल 26.03.2013 पर घर से निकले थे।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

9 बजे वह कहीं गया और उसकी तलाश की गई लेकिन वह नहीं मिला। विशेष रूप से, इसमें इस बात का कोई उल्लेख नहीं है कि अजीत पाल सुबह 9 बजे या रात 9 बजे घर से निकले थे या यह 'होलिका' देखने के लिए था। पीडब्लू-6 गोरखपुर पुलिस स्टेशन में मुख्य कांस्टेबल है जिसने एक्स रिकॉर्ड किया था। 27.03.2013 पर P1। उन्होंने कहा कि पीडब्लू-1 ने बताया कि उनका बेटा अजीत पाल बिना किसी को बताए 9 बजे घर से निकल गया था और उनकी खोज के बावजूद वह नहीं मिला था। 9 बजे के रूप में समय का उल्लेख है, यह निर्दिष्ट किए बिना कि यह सुबह या रात में था और फिर से, 'होलिका' का कोई उल्लेख नहीं है। हालाँकि, एफ. आई. आर. No.273/13 (उदा. पी35), 18 पर 28.03.2013 पर पंजीकृत: 20 घंटे, रिकॉर्ड किया गया कि अजीत पाल किसी को बताए बिना सुबह 9 बजे 26.03.2013 पर घर से निकला था और उसे हर जगह खोजा गया लेकिन वह नहीं मिला। फिर से, उसमें उनका होलिका देखने जाने का कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन अब स्पष्ट अस्पष्टता है कि क्या अजीत पाल सुबह 9 बजे या रात 9 बजे लापता हो गए थे। इसके अलावा, अभियोजन पक्ष के पास यह होगा कि अपहरणकर्ता फिरौती की राशि के बारे में भी निश्चित नहीं थे जो वे चाहते थे। अभियोजन पक्ष के मामले में कई अलग-अलग तथ्यों का उल्लेख किया गया है। यदि इस घटना का उद्देश्य फिरौती एकत्र करना था, तो यह संदेह है कि क्या अपहरणकर्ता अपनी मांग के बारे में इतने स्पष्ट नहीं थे।

17. इस भ्रम को बढ़ाते हुए, राजवंत कौर (पीडब्लू-1) ने अपनी जिरह के दौरान कहा कि फोन पर जिस व्यक्ति ने फिरौती की कॉल की थी, वह एक अजनबी था और फिर उसने कहा कि उसने आवाज को पहचान लिया था, लेकिन क्योंकि उसके बच्चे की जान को खतरा था, इसलिए उसने पुलिस को नहीं बताया। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने यह नहीं कहा कि उन्होंने अंत तक आवाज को पहचाना था। उसने यह भी स्वीकार किया कि उसने अपने परीक्षा-प्रमुख में यह भी उल्लेख नहीं किया कि उसने आवाज को पहचान लिया था। मामले को आगे बढ़ाते हुए, उसने कहा कि पुलिस ने 29.03.2013 पर ट्रैकिंग कुत्तों का उपयोग किया था, लेकिन इस सुझाव से इनकार किया कि कुत्तों ने कुएं में शव का पता लगाया था। उनके अनुसार, दोपहर में कुएं से शव निकालने के बाद शाम को कुत्तों का इस्तेमाल किया गया था। इसके बाद, उसने कहा कि ट्रैकिंग कुत्ते 7-8 बजे कुएं और कपड़े धोने के क्षेत्र में गए थे, लेकिन उसे याद नहीं था कि यह किस तारीख को था, लेकिन यह शव मिलने के बाद था। इसी तरह, पीडब्लू-1 के करीबी रिश्तेदार और अभियोजन पक्ष के जब्ती ज्ञापनों के एक प्रमुख गवाह जितेंद्र सिंह (पीडब्लू-8) ने कहा कि उन्होंने 28.03.2013 और 29.03.2013 के बीच सूँघने वाले कुत्तों का उपयोग किए जाने के बारे में सुना था, लेकिन यह उनकी उपस्थिति में नहीं था। कुत्तों को सूँघना/ट्रैक करना क्यों 13

पुलिस को शव मिलने के बाद सेवा में लगाया जाएगा, हत्या का हथियार और अन्य भौतिक वस्तुएं समझ में नहीं आती हैं। विशेष रूप से, जांच अधिकारी (पीडब्लू-16) ने जांच के दौरान सूँघने वाले कुत्तों/ट्रैकिंग कुत्तों के उपयोग का भी उल्लेख नहीं किया। यह दमन, चाहे वह किसी भी कारण से हो, अभियोजन पक्ष पर अच्छा प्रभाव नहीं डालता है।

18. ये मामले की नींव में स्पष्ट असमानताएँ होने के कारण, चीजें उत्तरोत्तर बदतर होती जाती हैं। भारती एयरटेल लिमिटेड के नोडल अधिकारी सैद्ध बोहरे (पीडब्लू-15), जिन्होंने पुलिस को कॉल डेटा प्रस्तुत किया, ने कहा कि जब उनसे पूछा गया तो उन्होंने उन विवरणों को पुलिस अधीक्षक कार्यालय को ईमेल द्वारा भेजा। उन्होंने ईमेल की एक प्रति पेश की, जिसमें पुलिस अधीक्षक के कार्यालय सीई (एक्स। पी31)। उन्होंने कहा कि मोबाइल नंबर 9993135127 का ग्राहक बुलेतन यादव का बेटा ओम प्रकाश था और उसने कॉल विवरण और आई. एम. ई. आई. डेटा प्रस्तुत किया। कॉल डेटा स्टेटमेंट (उदा. पी31) बताता है कि यह 18 साल की उम्र में पुलिस को उपलब्ध कराया गया था: 05 28.03.2013 पर घंटे। इसके बाद ही 18 साल की उम्र में प्राथमिकी दर्ज की गई: 20 घंटे। हालाँकि, कॉल डेटा स्टेटमेंट ओम प्रकाश यादव को फिरोती कॉल से जोड़ने के लिए पर्याप्त था, लेकिन पुलिस ने प्राथमिकी में उल्लेख करना चुना कि आरोपी 'अज्ञात' था। इसके अलावा, यदि Ex। पी31 के बयान में ओम प्रकाश यादव की संलिप्तता की ओर इशारा किया गया है, जैसा कि जांच अधिकारी (पीडब्लू-16) ने दावा किया है, इस बारे में कोई स्पष्टीकरण सामने नहीं आया है कि पुलिस ने राजेश यादव को पहले क्यों उठाया।

19. इसके अलावा, और सबसे महत्वपूर्ण, इस बारे में कोई स्पष्टता नहीं है कि अपीलार्थियों को वास्तव में पुलिस द्वारा कब 'हिरासत' में लिया गया था। पीडब्लू-2 ने अपने जाँच-इन-चीफ में कहा कि पुलिस ने राजेश यादव को पकड़ लिया और उसे दोपहर के समय गोरखपुर पुलिस स्टेशन ले गई। अपनी जिरह के दौरान, पीडब्लू-2 ने फिर से कहा कि पुलिस ओम प्रकाश यादव को 28.03.2013 पर नहीं ले गई, बल्कि उन्होंने राजेश यादव और राजा यादव को ले लिया। पीडब्लू-2 ने इस सुझाव का स्पष्ट रूप से खंडन किया कि पुलिस राजा यादव और राजेश यादव को 28.03.2013 पर नहीं ले गई और उन्होंने उन्हें 29.03.2013 पर ले लिया। आरोपी के रिश्तेदार शिव प्रकाश (पीडब्लू-4) ने यह भी बताया कि गोरखपुर पुलिस उसे राजा यादव, बृजेश यादव, ओम प्रकाश यादव और राजेश यादव के साथ ले गई थी और उन्हें उसी रात पुलिस स्टेशन में रखा था, जहाँ उन्हें पीटा गया था। अभियोजन पक्ष द्वारा उन्हें शत्रुतापूर्ण घोषित किया गया और उनसे जिरह की गई। उन्होंने फिर से दावा किया कि पुलिस उन्हें 28.03.2013 की रात को ले गई थी। उन्होंने कहा कि वह

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

उसे 5 तारीख को गोरखपुर पुलिस स्टेशन से रिहा कर दिया गया था, लेकिन उसने डर के कारण शिकायत नहीं की, क्योंकि पुलिस ने उसे बहुत पीटा था।

20. प्रिंसी ठाकुर (डी. डब्ल्यू.-2) ने बताया कि वह लंबे समय से ओम प्रकाश यादव के घर जाती थीं क्योंकि उनकी मां उनके लिए काम करती थीं। उसने दावा किया कि गोरखपुर पुलिस ने राजा यादव और राजेश यादव को दोपहर 3 से 4 बजे 27.03.2013 पर ही गिरफ्तार कर लिया और उन्हें पूछताछ के लिए पुलिस स्टेशन ले गई। उसने बताया कि उस दिन रात करीब 8 से 9 बजे पुलिस उसे भी पूछताछ के लिए गोरखपुर पुलिस स्टेशन ले गई। उसने आरोप लगाया कि पुलिस ने उनके सभी मोबाइल जब्त कर लिए। उसके अनुसार, पुलिस ने राजा यादव और राजेश यादव को बहुत पीटा। उसने आगे कहा कि पुलिस ने राजेश यादव के बाल निकाले और उन तीनों से दिन-रात पूछताछ की गई। उसने आगे दावा किया कि 30.03.2013 पर पुलिस ओम प्रकाश यादव को 2 से 3 बजे पुलिस स्टेशन ले आई। उसने दावा किया कि पुलिस ने ओम प्रकाश यादव को बहुत पीटा और उसने इसे देखा। कहा जाता है कि ओम प्रकाश बेहोश हो गए थे और दो पुलिसकर्मी राजेश नाग और जुगल किशोर उन्हें भंडारी अस्पताल ले गए। उसने कहा कि जब उसे आईडी1 पर रिहा किया गया, तो वह भंडारी अस्पताल में ओम प्रकाश यादव से मिलने गई और वहां चार पुलिसकर्मी थे, जो यह सुनिश्चित करने के लिए उसकी रखवाली कर रहे थे कि वह भाग न जाए। उसने कहा कि वह हर दिन ओम प्रकाश यादव को खाना देने जाती थी और पुलिस पूरे दिन और पूरी रात मौजूद रहती थी। उसने कहा कि पुलिस ने उसका मोबाइल जब्त कर लिया और उसे रसीद सौंपने पर अदालत के माध्यम से वापस मिल गया। इस बचाव पक्ष के गवाह का साक्ष्य उसकी जिरह के दौरान व्यावहारिक रूप से अडिग रहा। अभियोजन पक्ष ने आसानी से इस गवाह को पूरी तरह से नजरअंदाज करने का फैसला किया और उसका कोई उल्लेख नहीं किया।

21. भले ही अभियोजन पक्ष के अपने गवाहों के साक्ष्य के आधार पर डी. डब्ल्यू.-2 के बयान को छूट दी गई हो, पीडब्लू-2 और पीडब्लू-4, राजेश यादव और राजा यादव को पुलिस 28.03.2013 पर ही ले गई थी, न कि 29.03.2013 पर, जैसा कि अभियोजन पक्ष ने दावा किया है। हालाँकि, उनकी गिरफ्तारी बहुत बाद में दिखाई दी। राजेश यादव को केवल 6 बजे 29.03.2013 पर गिरफ्तार किया गया था: 30 शाम को, जबकि राजा यादव को 5 बजे 31.03.2013 पर गिरफ्तार किया गया: 40 पी एम। ओम प्रकाश यादव को बहुत बाद में 3 बजे 05.04.2013 पर गिरफ्तार किया गया: 30 पी एम। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जांच अधिकारी (पीडब्लू-16) ने 1 पर राजेश यादव से पूछताछ करने का फैसला किया: 45 29.03.2013 पर पी. एम. करें और उसे गिरफ्तार किए बिना भी अपना इकबालिया बयान दर्ज करें, जिसके तहत उस पर 'अपराध का आरोप' लगाया जाता। यह इस कबूलनामे के बल पर है कि पुलिस और गवाहों ने कथित तौर पर 15

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 16

राजेश यादव के साथ कुँ पर, जहाँ से अजीत पाल के शव को निकाला गया था। वास्तव में, राजेश यादव पर उस समय 'किसी भी अपराध का आरोप' भी नहीं लगाया गया था जब उसने स्वीकारोक्ति दी थी और कथित तौर पर शव को बरामद करने में पुलिस की मदद की थी। इसी तरह, राजा यादव को तब तक गिरफ्तार नहीं किया गया था जब तक कि उनका इकबालिया बयान दर्ज नहीं किया गया था और जब उन्होंने कथित तौर पर अपने खून से सने कपड़ों को जब्त करने में पुलिस की

मदद की थी तो उन पर किसी भी तरह का आरोप नहीं लगाया गया था। वास्तव में, वे उस समय 'पुलिस की हिरासत' में नहीं थे। उस स्थिति में, जो महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होगा वह पुलिस द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया की कानूनी पवित्रता के बारे में है और इसके परिणामस्वरूप, इस तरह के तथाकथित स्वीकारोक्ति के बल पर उनके द्वारा की गई बरामदगी का मूल्य क्या है।

22. भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 26 (संक्षिप्तता के लिए, 'साक्ष्य अधिनियम') में प्रावधान है कि किसी भी व्यक्ति द्वारा पुलिस अधिकारी की हिरासत में रहते हुए की गई कोई भी स्वीकारोक्ति ऐसे व्यक्ति के खिलाफ तब तक साबित नहीं की जाएगी, जब तक कि यह मजिस्ट्रेट की तत्काल उपस्थिति में नहीं की जाती है। धारा 27, उसके बाद, साक्ष्य अधिनियम की धारा 26 के अपवाद की प्रकृति में है। इसमें कहा गया है कि जब किसी भी तथ्य को पुलिस अधिकारी की हिरासत में किसी व्यक्ति से प्राप्त जानकारी के परिणामस्वरूप पाया जाता है, तो ऐसी जानकारी, चाहे वह स्वीकारोक्ति के बराबर हो या नहीं, जो इस तरह से खोजे गए तथ्य से स्पष्ट रूप से संबंधित है, साबित की जा सकती है। इसलिए, साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के तहत यह आवश्यक है कि संबंधित व्यक्ति पर 'अपराध का आरोप' लगाया जाना चाहिए और 'पुलिस अधिकारी की हिरासत' में होने के कारण, उसे किसी तथ्य की खोज के लिए जानकारी देनी चाहिए और उस जानकारी का इतना हिस्सा, चाहे वह स्वीकारोक्ति के बराबर हो या नहीं, जो स्पष्ट रूप से खोजे गए तथ्य से संबंधित हो, उसके खिलाफ साबित किया जा सकता है। वास्तव में, साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के तहत अभिनिर्धारित अपवाद को लागू करके, पुलिस के समक्ष किए गए स्वीकारोक्ति को सीमित सीमा तक स्वीकार्य बनाने के लिए दोनों पहलू, अर्थात् 'पुलिस अधिकारी की हिरासत में होना' और 'अपराध का आरोपी होना' अनिवार्य पूर्व-आवश्यकताएं हैं।

23. इस संबंध में, बोधराज उर्फ बोधा और अन्य बनाम जम्मू और कश्मीर राज्य 7 का संदर्भ दिया जा सकता है, जिसमें इस न्यायालय ने कहा था कि 'पुलिस हिरासत' की आवश्यकता अत्यंत विसंगत परिणामों के लिए उत्पादक है और उन मामलों में मूल्यवान साक्ष्य के बहिष्कार का कारण बन सकती है जहां

7 (2002) 8 एससीसी 45

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

एक व्यक्ति, एक अपराध करने के बाद एक पुलिस अधिकारी से मिलता है और अपराध की परिस्थितियों को बताता है जो उससे प्राप्त जानकारी के परिणामस्वरूप मृत शरीर, हथियार या किसी अन्य भौतिक तथ्य की खोज की ओर ले जाती है, और बाद में उसे हिरासत में ले लिया जाता है और वह एक 'आरोपी' बन जाता है। इस न्यायालय ने कहा कि यह जानकारी, जो अन्यथा स्वीकार्य होगी, साक्ष्य अधिनियम की धारा 26 के तहत अस्वीकार्य हो जाती है क्योंकि यह 'पुलिस अधिकारी की हिरासत' में किसी व्यक्ति से नहीं आई थी या बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति से आई थी जो 'पुलिस अधिकारी की हिरासत' में नहीं था। दूसरे शब्दों में, अभियुक्त द्वारा 'हिरासत में रहते हुए' दी

गई सटीक जानकारी, जिससे वस्तुओं की बरामदगी हुई, साबित की जा सकती है। यह ध्यान दिया गया कि यह सिद्धांत इस सिद्धांत पर आधारित है कि यदि किसी कैदी से प्राप्त किसी भी जानकारी के आधार पर खोज के रूप में कोई तथ्य पाया जाता है, तो ऐसी खोज इस बात की गारंटी है कि कैदी द्वारा प्रदान की गई जानकारी सच है।

24. इसके बाद, कर्नाटक राज्य बनाम डेविड रोजारियो और अन्य 8 में,

इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के तहत अन्यथा स्वीकार्य जानकारी अस्वीकार्य हो जाएगी, यदि यह 'पुलिस अधिकारी की हिरासत' में किसी व्यक्ति से नहीं आई है या किसी ऐसे व्यक्ति से आई है जो 'पुलिस अधिकारी की हिरासत में नहीं है'। यह आगे कहा गया कि जो स्वीकार्य है वह जानकारी है न कि पुलिस अधिकारी द्वारा उस पर बनाई गई राय और दूसरे शब्दों में, 'हिरासत' में रहते हुए आरोपी द्वारा दी गई सटीक जानकारी जिसके कारण वस्तुओं की बरामदगी हुई, उसे साबित करना होगा। इस न्यायालय के अनुसार दो आवश्यक आवश्यकताएँ हैं कि: (i) जानकारी देने वाले व्यक्ति पर 'अपराध का आरोप' होना चाहिए; और (ii) वह 'पुलिस हिरासत' में होना चाहिए।

25. फिर से, आशीष जैन बनाम मकरंद सिंह और अन्य 9 में, यह न्यायालय

अभिनिर्धारित किया कि एक बार जब अभियुक्त का इकबालिया बयान तथ्यों के आधार पर अनैच्छिक पाया जाता है, तो इसे भारत के संविधान के अनुच्छेद 20 (3) द्वारा प्रभावित किया जाएगा, जिससे इस तरह का इकबालिया बयान अस्वीकार्य हो जाएगा। यह आगे नोट किया गया कि आत्म-दोषपूर्ण साक्ष्य को स्वीकार करने पर प्रतिबंध है, लेकिन यदि यह किसी अपराध के संबंध में भौतिक वस्तुओं की बरामदगी की ओर ले जाता है, तो इसे अक्सर प्रत्येक मामले की परिस्थितियों के अनुसार साक्ष्य मूल्य रखने के लिए लिया जाता है। इस न्यायालय ने आगे आगाह किया कि यदि इस तरह का बयान अनुचित दबाव में दिया जाता है और

8 (2002) 7 एससीसी 728 9 (2019) 3 एससीसी 770 17

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 18

जाँच अधिकारी की मजबूरी में, वसूली की ओर ले जाने वाले इस तरह के बयान का साक्ष्य मूल्य अमान्य है।

26. हाल ही में, बॉबी बनाम केरल राज्य 10 मामले में, इस न्यायालय ने पुलुकुरी कोटय्या बनाम राजा सम्राट 11 मामले में प्रिवी काउंसिल के फैसले को संदर्भित किया।

जिसमें साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 पर विस्तार से विचार किया गया था और यह नोट किया गया था कि धारा 27 पूर्ववर्ती प्रावधानों द्वारा लगाए गए निषेध के लिए एक अपवाद प्रदान करती है और 'पुलिस हिरासत' में 'अभियुक्त' द्वारा दिए गए कुछ बयानों को साबित करने में सक्षम बनाती है। यह देखा गया कि धारा 27 को लागू करने के लिए आवश्यक शर्त यह है कि 'पुलिस अधिकारी की अभिरक्षा' में 'किसी भी अपराध के आरोपी' व्यक्ति से प्राप्त जानकारी के परिणामस्वरूप किसी तथ्य

का पता लगाया जाना चाहिए और उसके बाद इतनी जानकारी, जो इस तरह से खोजे गए तथ्य से स्पष्ट रूप से संबंधित है, साबित की जा सकती है। यह देखा गया कि आम तौर पर, धारा 27 को तब लागू किया जाता है जब 'पुलिस हिरासत' में कोई व्यक्ति छिपाने के किसी स्थान से कोई वस्तु, जैसे कि शव, एक हथियार या गहने पेश करता है, जिसे अपराध से जुड़ा हुआ कहा जाता है, जिसमें सूचना देने वाला आरोपी होता है। हालाँकि, प्रिवी काउंसिल ने निष्कर्ष निकाला कि धारा 27 द्वारा जोड़ी गई धारा 26 के अपवाद को प्रावधान के सार को रद्द करने के लिए नहीं माना जाना चाहिए और 'खोजे गए तथ्य' को उत्पादित वस्तु के बराबर मानना गलत होगा; 'खोजे गए तथ्य' में उस स्थान को शामिल किया गया है जहाँ से वस्तु उत्पन्न की गई है और इसके बारे में आरोपी का ज्ञान है, और दी गई जानकारी इस तथ्य से स्पष्ट रूप से संबंधित होनी चाहिए। उदाहरण के रूप में, यह स्पष्ट किया गया था कि हिरासत में एक व्यक्ति द्वारा प्रदान की गई जानकारी कि "मैं अपने घर की छत में छिपा हुआ चाकू लाऊंगा" चाकू की खोज की ओर नहीं ले जाती है; क्योंकि चाकू कई साल पहले खोजे गए थे, लेकिन अगर यह इस तथ्य की खोज की ओर ले जाता है कि सूचना देने वाले के घर में एक चाकू छिपा हुआ है और अगर चाकू का उपयोग बंद करने के लिए किया गया था, तो पाया गया तथ्य बहुत प्रासंगिक है। इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए, इस न्यायालय ने कहा कि साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 की आवश्यकता है कि 'तथ्य की खोज' उस स्थान को शामिल करती है जहाँ से वस्तु को प्रस्तुत किया जाता है और इसके बारे में 'अभियुक्त' का ज्ञान और दी गई जानकारी स्पष्ट रूप से उक्त तथ्य से संबंधित होनी चाहिए।

10 2009 की आपराधिक अपील संख्या 1439, 12.01.2023 पर निर्णय लिया गया। 11 ए. आई. आर. 1947 प्रिवी काउंसिल 67

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

27. हाथ में मामले में, हालांकि राजेश यादव को पुलिस स्टेशन ले जाया गया था, चाहे वह 29.03.2013 पर हो या उससे पहले भी, उन्हें 18 साल की उम्र में गिरफ्तार किए जाने तक 'पुलिस हिरासत' में नहीं कहा जा सकता था: 30 आई. डी. 1 पर घंटे, क्योंकि उन्होंने एफ. आई. आर. में एक 'आरोपी' के रूप में दावा नहीं किया था और गिरफ्तारी तक उन पर 'किसी भी अपराध का आरोप' नहीं लगाया गया था। इसलिए, यह उसकी गिरफ्तारी थी जिसके परिणामस्वरूप वास्तविक 'पुलिस हिरासत' हुई, और इस तरह की गिरफ्तारी से पहले और उस पर 'किसी भी अपराध का आरोप' लगाए जाने से पहले उसके द्वारा की गई स्वीकारोक्ति, साक्ष्य अधिनियम की धारा 26 द्वारा सीधे प्रभावित होगी और इस तरह के स्वीकारोक्ति के दौरान उसके द्वारा दी गई किसी भी जानकारी पर धारा 27 के तहत अपवाद लागू करने की कोई संभावना नहीं है, भले ही इससे कोई तथ्य सामने आया हो। नतीजतन, मृत शरीर, हत्या के हथियार और अन्य भौतिक वस्तुओं की कथित खोज, भले ही वह राजेश यादव के इशारे पर हो, उसके खिलाफ साबित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि जिस समय उसने कथित रूप से स्वीकारोक्ति की थी, उस समय उस पर 'किसी भी अपराध का आरोप' नहीं था और वह 'पुलिस हिरासत' में नहीं था। राजा यादव और ओम प्रकाश यादव के मामले में भी

ऐसा ही होगा, क्योंकि उन्हें भी प्राथमिकी में 'आरोपी' के रूप में नामित नहीं किया गया था और जब तक उन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया और 'पुलिस हिरासत' में नहीं लिया गया, तब तक उन पर 'किसी भी अपराध का आरोप' नहीं लगाया गया था। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि पुलिस की ओर से यह चूक अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक है, क्योंकि यह अनिवार्य रूप से अपीलार्थियों के कहने पर की गई 'बरामदगी' पर आधारित है, जो कथित रूप से साक्ष्य अधिनियम की धारा 27 के तहत की गई थी। 28. इसके अलावा, जिस तरह से जांच अधिकारी (पीडब्लू-16) ने कार्यवाही तैयार की, वह अपने आप में एक महत्वपूर्ण मुद्दा है और यह अभियोजन पक्ष के मामले के लिए भी उतना ही कमजोर है। याकूब अब्दुल रज़ाक में

मेमन बनाम महाराष्ट्र राज्य, सी. बी. आई. के माध्यम से, बॉम्बे **12**, यह न्यायालय

इस बात पर ध्यान दिया गया कि 'पंचनामे' के पीछे प्राथमिक उद्देश्य तलाशी के निष्पादन के लिए सौंपे गए अधिकारियों की ओर से संभावित चालों और अनुचित लेन-देन से बचना है और यह भी सुनिश्चित करना है कि परिसर में पाया गया कुछ भी आपत्तिजनक वास्तव में वहाँ पाया गया था और खोज दल के अधिकारियों द्वारा पेश या लगाया नहीं गया था। यह आगे नोट किया गया कि विधायी इरादा अधिकारियों के इन कदाचारों को नियंत्रित करना और उनकी जांच करना था, किसी स्थान की खोज और किसी स्थान की जब्ती के लिए स्वतंत्र और सम्मानित व्यक्तियों की उपस्थिति को अनिवार्य बनाना था।

12 (2013) 13 एससीसी 1 19

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 20

लेख। यह इंगित किया गया था कि एक पंचनामे का उपयोग न्यायालय में पुष्टिकारक साक्ष्य के रूप में किया जा सकता है जब सम्मानित व्यक्ति जो इसका गवाह है, साक्ष्य अधिनियम की धारा 157 के तहत न्यायालय में साक्ष्य देता है। इस न्यायालय ने नोट किया कि धारा 100 (8) की धारा 100 (4) दो या दो से अधिक सम्मानित और स्वतंत्र व्यक्तियों की उपस्थिति में तलाशी के संबंध में प्रक्रिया को निर्धारित करती है, अधिमानतः एक ही इलाके से, ताकि जनता के बीच विश्वास और सुरक्षा और सुरक्षा की भावना का निर्माण किया जा सके। एक वैध पंचनामे के प्रयोजनों के लिए धारा 100 Cr.P.C से निम्नलिखित अनिवार्य शर्तों को हटा दिया गया था:

(क) आधिकारिक (आधिकारिक) और पंच गवाहों की व्यक्तिगत खोज के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए ताकि अदालत के दिमाग में विश्वास पैदा किया जा सके क्योंकि कुछ भी प्रत्यारोपित नहीं किया गया है और सही खोज की गई है और जब्त की गई चीजें वास्तविक पाई गई हैं।

(ख) तलाशी की कार्यवाही पंच गवाहों की देखरेख में आई. ओ. या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा दर्ज की जानी चाहिए।

(ग) तलाशी की सभी कार्यवाहियों को बहुत स्पष्ट रूप से दर्ज किया जाना चाहिए जिसमें तलाशी के लिए स्थान की पहचान, सभी स्थान जिनकी तलाशी ली गई है और जब्त की गई सभी वस्तुओं का विवरण, और साथ ही, यदि कोई नमूना विश्लेषण के उद्देश्य से तैयार किया गया है जो पंचनाम में भी स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए।

(घ) आई. ओ. स्थानों की खोज के लिए अपने अधीनस्थों की सहायता ले सकता है। यदि कोई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद हैं, तो उन्हें मुख्य आई. ओ. के हस्ताक्षर के बाद पंचनाम पर भी हस्ताक्षर करने चाहिए।

(ङ) स्थान, पुलिस स्टेशन का नाम, आधिकारिक रैंक (आई. ओ.), पंच गवाहों का पूरा विवरण और शुरुआत और अंत का समय पंचनामे में उल्लेख किया जाना चाहिए।

(च) पंचनामा को पंच गवाहों के साथ-साथ संबंधित आई. ओ. द्वारा सत्यापित किया जाना चाहिए।

(छ) पंचनामे में किसी भी पुनर्लेखन, सुधार और त्रुटियों को गवाहों द्वारा सत्यापित किया जाना चाहिए।

(ज) यदि संहिता की धारा 165 के तहत अदालत के वारंट के बिना तलाशी ली जाती है, तो आई. ओ. को कारण दर्ज करना चाहिए और एक तलाशी ज्ञापन जारी किया जाना चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

यह अभिनिर्धारित किया गया था कि एक पंचनामा न्यायालय में अस्वीकार्य होगा यदि इसे जांच अधिकारी द्वारा धारा 162 का उल्लंघन करने वाले तरीके से दर्ज किया जाता है क्योंकि प्रक्रिया के लिए जांच अधिकारी को तलाशी की कार्यवाही को दर्ज करने की आवश्यकता होती है जैसे कि वे पंच गवाहों द्वारा स्वयं लिखे गए थे और इसे जांच करने वाले गवाहों के रूप में दर्ज नहीं किया जाना चाहिए, जैसा कि धारा 161 में निर्धारित किया गया है। इस न्यायालय ने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि प्रक्रिया से विचलन की स्थिति में पूरा पंचनामा त्यागने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा और यदि विचलन एक व्यावहारिक असंभवता के कारण हुआ है, तो उसे जांच अधिकारी द्वारा दर्ज किया जाना चाहिए ताकि वह जवाब दे सके।

29. हाल ही में, रामानंद @नंदलाल भारती बनाम उत्तर राज्य में

प्रदेश 13, इस न्यायालय की 3-न्यायाधीशों की पीठ ने कहा कि खोज के साक्ष्य को स्वीकार करने से पहले जिस कानून की आवश्यकता को पूरा करने की आवश्यकता है, वह पंचनामे की सामग्री को साबित करना है और जांच अधिकारी, अपने बयान में, पंचनामे की सामग्री को साबित करने के लिए कानून में बाध्य है। यह भी कहा गया कि यह केवल तभी होगा जब जांच अधिकारी ने कानून के अनुसार खोज पंचनामे की सामग्री को सफलतापूर्वक साबित कर दिया हो कि अभियोजन पक्ष को ऐसे साक्ष्य पर भरोसा करने में न्यायसंगत ठहराया जाएगा और निचली अदालत भी इसे स्वीकार

कर सकती है। यह अभिनिर्धारित किया गया था कि न्यायालय को जांच अधिकारी के साक्ष्य पर सुरक्षित रूप से भरोसा करने में सक्षम बनाने के लिए, यह आवश्यक है कि अभियुक्त के लिए जिम्मेदार सटीक शब्दों को, उसके द्वारा दिए गए बयान के रूप में, रिकॉर्ड पर लाया जाए और इस उद्देश्य के लिए, जांच अधिकारी अपने साक्ष्य में सटीक बयान देने के लिए बाध्य है, न कि केवल यह कहने के लिए कि हथियार का खोज पंचनामा तैयार किया गया था क्योंकि आरोपी इसे एक विशेष स्थान से बाहर निकालने के लिए तैयार था।

30. खेत सिंह बनाम भारत संघ 14 के मामले में, इस न्यायालय ने कहा कि भले ही तलाशी और जब्ती करने में कोई प्रक्रियात्मक अवैधता हो, लेकिन इसके द्वारा एकत्र किए गए साक्ष्य अस्वीकार्य नहीं होंगे और न्यायालय यह पता लगाने के लिए सभी परिस्थितियों पर विचार करेगा कि क्या कोई गंभीर पूर्वाग्रह है।

13 2022 की आपराधिक अपील संख्या 64-65, 13.10.2022 = 2022 SCC ऑनलाइन SC 1396 पर निर्णय लिया गया
14 (2002) 4 एससीसी 380 21

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 22

अभियुक्त को आरोपित किया गया है। हालाँकि, इस न्यायालय ने बताया कि यदि तलाशी और जब्ती कानून और प्रक्रिया की पूरी तरह से अवहेलना थी और इस तरह की तलाशी और जब्ती के दौरान एकत्र किए गए साक्ष्य के साथ छेड़छाड़ या हस्तक्षेप की कोई संभावना थी, तो उस साक्ष्य को स्वीकार नहीं किया जा सकता था। हालाँकि ये अवलोकन स्वापक औषधि और मनःप्रभावी पदार्थ अधिनियम, 1985 के तहत तलाशी और जब्ती के संदर्भ में किए गए थे, लेकिन वे आम तौर पर प्रासंगिक होंगे।

31. इस पृष्ठभूमि में परीक्षण किए जाने पर, जिस तरीके और तरीके से मामले में पंचनामा और ज्ञापन तैयार किए गए थे, वह अभियोजन पक्ष को उच्च और शुष्क छोड़ देता है। उदाहरण के लिए, नक्ष पंचनामा (उदा. पी3) दिनांकित पी. डब्ल्यू.-2 और पी. डब्ल्यू.-8 सहित पांच गवाहों के नाम दर्ज करता है, और कहता है कि गवाहों ने मृतक अजीत पाल @बॉबी के शरीर का निरीक्षण किया; कि मृतक की गर्दन के दाईं ओर एक बड़ा घाव था; कि, पंच गवाहों की राय में, मृतक की हत्या राजेश यादव और राजा यादव ने चाकू से उसका गला काटकर की थी; कि उसके शरीर को बोरे में भर दिया गया था; और कि बोरे को एक कुएं में फेंक दिया गया था। इसके बाद जांच अधिकारी (पीडब्लू-16) की राय दर्ज की जाती है, जिसमें तथ्यात्मक पहलुओं पर ध्यान देने के बाद उन्होंने कहा कि अजीत पाल की हत्या राजेश यादव और राजा यादव ने चाकू से गला काटकर की थी। विशेष रूप से, कथा पंच गवाहों की नहीं है, बल्कि ज्यादातर स्वयं पीडब्लू-16 की है और पंच गवाहों ने केवल पंचनामे पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके साथ ही, अपराध विवरण प्रपत्र (उदा. पी13) ने नोट किया कि अपराध स्थल का दौरा 15 बजे 29.03.2013 पर किया गया था: 15 घंटे और अभिलेख है कि खंडारी नहर से 15 मीटर की दूरी पर एक पुराना कुआँ स्थित है; कि कुएं के चारों ओर झाड़ियाँ उग रही हैं; कि एक सफेद बोरे के अंदर एक शव था जो कुएं में पानी में बह रहा था; कि कुएं की चौड़ाई 2

मीटर 70 सेंटीमीटर थी।; कि कुआँ 6 मीटर गहरा था और कुएँ में 1 मीटर पानी था और 5 मीटर खाली था।विशेष रूप से, हालांकि अपराध विवरण प्रपत्र में कहा गया है कि दो पंच गवाह मौजूद थे, लेकिन उनके द्वारा कोई विवरण नहीं है और उन्होंने केवल प्रपत्र पर हस्ताक्षर किए।अपराध विवरण प्रपत्र (उदा. पी14), धुलाई क्षेत्र और फ्लोर की दीवारों पर खून के झूलने से संबंधित; काली प्लास्टिक की चप्पलें; और शराब की एक खाली बोतल।वही पंच गवाह इस अपराध विवरण प्रपत्र में उल्लेख करते हैं और उन्होंने अपने हस्ताक्षर किए हैं लेकिन फिर से, यह उनकी कथा नहीं है और इस बात की कोई रिकॉर्डिंग नहीं है कि उन्होंने इन वस्तुओं को कैसे ठीक किया।इसके अलावा, फॉर्म सीधे इस राय को दर्ज करता है कि राजेश

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

यादव और राजा यादव ने अजीत पाल की हत्या कर दी थी, उसके शरीर को प्लास्टिक की बोरी में डाल दिया था और उसे कुएं में फेंक दिया था।

32. संपत्ति जब्ती ज्ञापन (उदा. पी 18 और एक्स। पी23), क्रमशः राजेश यादव और राजा यादव के खून से सने कपड़ों की जब्ती से संबंधित, इसी तरह का मसौदा तैयार किया गया है जिसमें गवाहों, बाम्बम (पीडब्लू-9) और सुरजीत सिंह का नाम लिया गया है, लेकिन उनकी ओर से कोई विवरण नहीं है कि इन वस्तुओं को बनाने के लिए किसी ने उनका नेतृत्व कैसे किया और उनकी सहायता कैसे की।इसी तर्ज पर, संपत्ति जब्त करने का ज्ञापन (उदा. पी9), रक्त-दाग वाली मिट्टी, नियंत्रित मिट्टी और प्लास्टिक की चप्पलों की जब्ती से संबंधित; संपत्ति जब्ती ज्ञापन (उदा. पी10), शराब की बोतल की जब्ती से संबंधित; संपत्ति जब्ती ज्ञापन (उदा. पी12), मृतक के शरीर की जब्ती और उसके कपड़ों के साथ-साथ उसके दाहिने हिस्से में पाए गए बालों से संबंधित; संपत्ति जब्ती ज्ञापन (पूर्व। पी11), हत्या के हथियार की जब्ती से संबंधित; और संपत्ति जब्ती ज्ञापन (एक्स। पी19) दो मोबाइल फोन की जब्ती से संबंधित; रिकॉर्डिंग की एक ही शैली को भी प्रतिबिंबित करता है। पंचनामों और बरामदगी के गवाहों ने दस्तावेजों के लिए केवल प्रमाणक के रूप में काम किया और अपने शब्दों में यह खुलासा नहीं किया कि इन वस्तुओं की खोज कैसे की गई, यानी किसके कहने पर और कैसे।अतः, इन सभी साक्ष्यों के संग्रह के संदर्भ में पुलिस द्वारा दर्ज की गई इन कार्यवाहियों की कोई वैध वैधता नहीं है।

33. अभियोजन पक्ष द्वारा डी. एन. ए. साक्ष्य पर भी भरोसा किया गया था, एक परिदृश्य पेश करके कि अजीत पाल अपने हमलावर के साथ संघर्ष कर रहा था और उस हाथापाई के दौरान, वह अपने हमलावर के सिर से कुछ बाल निकालने में कामयाब रहा और वे उसके हाथ में तब तक रहे जब तक कि उसका शरीर नहीं मिल गया।उस बाल के डीएनए विश्लेषण से साबित हुआ कि वे राजेश यादव के थे।हालाँकि, यह कहानी तर्कहीन पाई गई है।राजा यादव के गिरफ्तारी ज्ञापन के अनुसार (पूर्व। पी20), उसकी ऊँचाई 5.8 इंच थी और अभियोजन पक्ष यह चाहेगा कि उसने अपने गिरफ्तारी ज्ञापन (पूर्व) के अनुसार 15 वर्षीय लड़के अजीत पाल, जिसकी ऊँचाई 5.4 इंच थी, और राजेश यादव, जिसकी ऊँचाई 5.7 इंच थी, को पकड़ लिया। पी36), उसका गला काट दिया।बहुत लंबे

राजा यादव द्वारा पकड़े गए अजीत पाल द्वारा राजेश यादव के सिर पर अपना हाथ रखने की संभावना, जो उनसे भी बहुत लंबा था, जिससे वह कोई भी बाल तोड़ सकता था, स्वाभाविक रूप से असंभव है। यह परिदृश्य खुद को विश्वसनीयता के लिए उधार नहीं देता है और ऐसा लगता है कि राजेश यादव के बाल अभियोजन पक्ष के मामले की पुष्टि करने के लिए डीएनए विश्लेषण के लिए आसानी से उपलब्ध होंगे। इसके अलावा, इस बात पर भी संदेह है कि राजेश यादव को 23 लोग कब ले गए थे

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 24

पुलिस और जब वह उनके नियंत्रण में था तो क्या पुलिस द्वारा उसके बाल निकाले जा सकते थे, इस तरह के सबूत पुलिस द्वारा स्वयं पेश किए जाने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। मनोज और अन्य बनाम मध्य प्रदेश राज्य 15 के मामले में, इस न्यायालय की 3-न्यायाधीशों की पीठ ने अन्य बातों के साथ-साथ डी. एन. ए. साक्ष्य पर भरोसा करने से इनकार कर दिया, क्योंकि इसकी बरामदगी की वास्तविकता संदिग्ध थी। वर्तमान में भी, डी. एन. ए. साक्ष्य के स्रोत और उत्पत्ति के रूप में, बाल को संदिग्ध माना जाता है, उस डी. एन. ए. विश्लेषण का अंतिम परिणाम अभियोजन पक्ष के मामले को स्थापित करने में कोई वास्तविक उद्देश्य पूरा नहीं करता है।

34. अभियोजन पक्ष के मामले के ताबूत में कहावत अंतिम कील, यदि बिल्कुल भी आवश्यकता है, तो चौंकाने वाली चूक और पुलिस की ओर से लापरवाही से की गई जांच है। यह रिकॉर्ड में है कि जब जांच अधिकारी (पीडब्लू-16) ने पूर्व के तहत ओम प्रकाश यादव के घर की पहली तलाशी ली थी। पी-37 पंचनामा, कुछ भी नहीं मिला। हालांकि, बाद में बृजेश यादव की सहायता से की गई तलाशी में ओम प्रकाश यादव के घर के एक कमरे में एक ट्रंक से दो मोबाइल फोन जब्त किए गए। पहली बार की गई खोज के दौरान ये फोन क्यों नहीं मिले, यह नहीं बताया गया है। इसके अलावा, फोन की जब्ती के एक गवाह, शैवल @बामबाम (पीडब्लू-9) ने दावा किया कि मोबाइल में कोई सिम कार्ड नहीं थे, लेकिन उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि उन्होंने मोबाइल नहीं खोले और अंदर नहीं देखा। उन्होंने कहा कि उन्होंने मोबाइल चलाने की कोशिश नहीं की और न ही अंदर के नंबर देखे और दोनों फोन बंद थे। इस गवाह का स्व-विरोधाभासी बयान पुलिस द्वारा अपनाई गई संदिग्ध जांच प्रक्रिया में सहायता नहीं करता है। जहां तक कॉल डेटा और फिरौती कॉल का संबंध है, हम ध्यान दे सकते हैं कि संतोष जाधव, सहायक नोडल अधिकारी, रिलायंस कम्युनिकेशन की जांच पीडब्लू-17 के रूप में की गई थी और मोबाइल नंबर 8305620342 के कॉल डेटा के बारे में बात की गई थी जिससे फिरौती कॉल किए गए थे। उनके अनुसार, उक्त मोबाइल नंबर वाला सिम कार्ड दीपू के बेटे भुराजी को दिया गया था, जिसका पता घर संख्या 433, संजय गांधी वार्ड, तहसील जबलपुर था। उन्होंने अपने चुनाव पहचान पत्र के साथ भुराजी का 'ग्राहक आवेदन पत्र' प्रस्तुत किया। इन दस्तावेजों को एक्स के रूप में चिह्नित किया गया था। डी6.28.03.2013 के कॉल डेटा से पता चला कि इस सिम कार्ड का उपयोग IMEI नंबर 358327028551270 वाले मोबाइल हैंडसेट पर किया गया था। उन्होंने सबूत एक्स में चिह्नित किया। उस संबंध में पी 35। इसलिए, वह मोबाइल नंबर जिससे फिरौती कॉल किए गए थे

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

वह एक भुराजी, पुत्र दीपू के नाम पर था और उसका पता उपलब्ध था। हालाँकि, पुलिस ने भुराजी से संपर्क करने या उनसे पूछताछ करने का भी प्रयास नहीं किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि फिरौती कॉल करने के लिए उनके सिम कार्ड का उपयोग कैसे और क्यों किया गया था। इससे भी अधिक चौंकाने वाला तथ्य यह है कि, हालांकि पीडब्लू-17 ने भुराजी को इस मोबाइल नंबर के आवंटन का वास्तविक प्रमाण रिकॉर्ड में रखा है। डी 6), पुलिस द्वारा ओम प्रकाश यादव और मोबाइल नंबर 9993135127 के बीच संबंध स्थापित करने के लिए ऐसा कोई कदम नहीं उठाया गया, जिसके लिए उसे जिम्मेदार ठहराया गया था। पीडब्लू-15 ने कहा कि उक्त मोबाइल नंबर ओम प्रकाश यादव को आवंटित किया गया था, लेकिन सबूत में इसके सबूत में किसी भी दस्तावेज को चिह्नित नहीं किया। आश्चर्य की बात यह है कि उसने अपने बयान में कहा था कि वह आवेदन पत्र की प्रमाणित प्रतियां और उस समय इस्तेमाल की गई आईडी लेकर आया था जब यह सिम कार्ड ग्राहक ओम प्रकाश यादव को आवंटित किया गया था, लेकिन उन्हें चिह्नित नहीं किया गया था। वास्तव में, उक्त मोबाइल नंबर और ओम प्रकाश यादव के बीच कोई स्पष्ट संबंध स्थापित नहीं किया गया है। इस तरह के एक ठोस लिंक के अभाव में, कॉल डेटा रिपोर्ट (उदा। पी31) और इसकी सामग्री अभियोजन पक्ष के मामले को स्थापित करने में व्यावहारिक रूप से बेकार है कि फिरौती कॉल ओम प्रकाश यादव के मोबाइल फोन हैंडसेट से भुराजी का सिम कार्ड, जिसमें मोबाइल नंबर 8305620342 था, डाल कर किए गए थे।

35. एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता यह है कि पीडब्लू-2 ने अपनी जिरह के दौरान एक अलग कहानी के साथ सामने आया कि उन महत्वपूर्ण दिनों के दौरान क्या हुआ। उन्होंने कहा कि 28.03.2013 पर जब ओम प्रकाश यादव और वह गुरुद्वारा गए और जब वह वहाँ थे, तो ओम प्रकाश यादव ने उन्हें एक मिस्ड कॉल दिया। उन्होंने दावा किया कि उन्होंने उन्हें दोपहर लगभग 2 बजे वापस बुलाया और ओम प्रकाश यादव ने उन्हें बताया कि बॉबी वहाँ था और उसने गुटका ले लिया था और चला गया था। पीडब्लू-2 ने दावा किया कि उसने अपनी बहन को चिंता न करने के लिए कहा और बॉबी ओम प्रकाश यादव के साथ था। हालाँकि, उन्होंने आगे कहा कि जब वे 3 बजे पुलिस स्टेशन पहुँचे: 30 शाम को, उसने पुलिस को ओम प्रकाश यादव के फोन करने और उससे बात करने के बारे में नहीं बताया। उन्होंने दावा किया कि 28.03.2013 पर, ओम प्रकाश यादव ने धमकी दी कि वह उन्हें मार देंगे और उनके घर को जला देंगे। पीडब्लू-2 के अनुसार, उसने फिरौती मांगने वाले फोन करने वाले की आवाज को नहीं पहचाना था। उन्होंने आगे कहा कि जब वे राजेश यादव और राजा यादव को ले गए तो पुलिस ने उन्हें या पीडब्लू-1 को फोन नहीं किया। पीडब्लू-2 ने यह भी कहा कि जब उन्होंने उससे पूछताछ की। यानी पीडब्लू-2, आई. डी. 1 पर शाम को लगभग 5 या 6 बजे, उन्होंने उन्हें फोन करने वालों आदि के बारे में सब कुछ बताया। एक बार फिर, कहानी में इस नए मोड़ का

अभियोजन पक्ष द्वारा पूरी तरह से दमन किया गया है और यह कैसे संभवतः अदालत के समक्ष पेश किए गए अपने संस्करण के साथ हो सकता है।

25

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.] 26

36. अंत में, डॉ. विवेक श्रीवास्तव (पीडब्लू-7), जिन्होंने पोस्टमॉर्टम परीक्षण किया, ने कहा कि मृतक के पेट में अर्ध-पचाया हुआ भोजन पाया गया था और इसे मृत्यु से छह घंटे से भी कम समय पहले खाया गया होगा। उनके अनुसार, यह 30 मिनट या 1 घंटा हो सकता था। उन्होंने कहा कि यदि भोजन के साथ शराब पी जाती है और उसके बाद 1 घंटे के भीतर मृत्यु हो जाती है, तो अर्ध-पचने वाले भोजन से शराब की गंध आना संभव है। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें शराब की ऐसी कोई गंध नहीं थी। उनकी गवाही अभियोजन पक्ष के इस दावे को कमजोर करती है कि अजीत पाल ने अपनी हत्या से ठीक पहले व्हिस्की का सेवन किया था।

37. अपने फैसले के साथ मामले को छोड़ने से पहले, हम पुलिस जांच के निराशाजनक मानकों पर गहरी और गहरी चिंता के साथ ध्यान दे सकते हैं जो अपरिवर्तनीय मानक प्रतीत होते हैं। बहुत पहले वर्ष 2003 में डॉ. जस्टिस की 'आपराधिक न्याय प्रणाली के सुधारों पर समिति' की रिपोर्ट में इस प्रकार दर्ज किया गया था:

‘जिस तरह से पुलिस जांच की जाती है, वह आपराधिक न्याय प्रणाली के कामकाज के लिए महत्वपूर्ण है। यदि साक्ष्य के संग्रह को त्रुटि या कदाचार से दूषित किया जाता है तो न केवल न्याय का गंभीर गर्भपात होगा, बल्कि दोषी पर सफल मुकदमा सच्चाई की गहन और सावधानीपूर्वक खोज और साक्ष्य के संग्रह पर निर्भर करता है जो स्वीकार्य और संभावित दोनों हैं। इस तलाशी को शुरू करने में, यह पुलिस का कर्तव्य है कि वह निष्पक्ष और पूरी तरह से जांच करे और सभी सबूत एकत्र करे, चाहे वह संदिग्ध के पक्ष में हो या उसके खिलाफ। समाज की सुरक्षा सर्वोपरि विचार होने के कारण, कानून, प्रक्रियाएं और पुलिस प्रथाएं ऐसी होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि दोषियों को पकड़ा जाए और उन्हें अधिकतम प्रेषण के साथ दंडित किया जाए और इस प्रक्रिया में निर्दोष लोगों को परेशान नहीं किया जाए। जांच का उद्देश्य और वास्तव में, पूरी आपराधिक न्याय प्रणाली सच्चाई की खोज करना है।..... भारत में पुलिस जांच का स्तर अभी भी खराब है और इसमें सुधार की काफी गुंजाइश है। बिहार पुलिस आयोग (1961) ने निराशा के साथ कहा कि "दौरों और गवाहों की जांच के दौरान, आयोग के समक्ष इतनी सार्वभौमिक रूप से कोई शिकायत नहीं की गई है जितनी कि पुलिस जांच की खराब गुणवत्ता के बारे में की गई है।" अभद्रता के अलावा, जनता के सदस्यों ने अशिष्टता, धमकी, सबूतों को दबाने, सबूतों को गढ़ने और मामलों की दुर्भावनापूर्ण पैडिंग की शिकायत की।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

38. मार्च, 2012 में अपनी रिपोर्ट में इसी भावना को दोहराते हुए, भारत के विधि आयोग ने कहा कि हमारे देश में दोषसिद्धि की कम दर के प्रमुख कारणों में, अन्य बातों के साथ-साथ, पुलिस द्वारा अक्षम, अवैज्ञानिक जांच और पुलिस और अभियोजन तंत्र के बीच उचित समन्वय की कमी शामिल है। इन निराशाजनक अंतर्दृष्टियों के बाद से काफी समय बीतने के बावजूद, हम यह कहते हुए निराश हैं कि वे आज भी दुखद रूप से सच हैं। यह एक उदाहरण है। युवावस्था के पहले दशक में एक युवा लड़के को क्रूरता से मार दिया गया था और गलत काम करने वालों को उसके और उसके परिवार के साथ किए गए अन्याय के लिए अनिवार्य रूप से कानून के दायरे में लाना पड़ा था। हालाँकि, जिस तरह से पुलिस ने अभियुक्तों के खिलाफ कार्यवाही करने और साक्ष्य एकत्र करने में आवश्यक मानदंडों को पूरी तरह से ध्यान में रखते हुए अपनी जांच को तैयार किया; महत्वपूर्ण सुरागों को अनियंत्रित छोड़ दिया और अन्य सुरागों को छिपाया जो उस कहानी के अनुरूप नहीं थे जिसकी उन्होंने कल्पना की थी; और, अंततः, अपीलार्थियों के अपराध की ओर इशारा करने वाली घटनाओं की एक ठोस, कल्पनीय और मूर्खतापूर्ण श्रृंखला प्रस्तुत करने में विफल रहने में, जिसमें किसी अन्य परिकल्पना की कोई संभावना नहीं है, हमारे पास अपीलार्थियों को संदेह का लाभ देने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। 'उचित संदेह से परे सबूत' के उच्च सिद्धांत और उससे भी अधिक, परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर निर्मित मामले में, प्रबल होना होगा और इसे प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह शायद सही समय है कि पुलिस के लिए अपनी जांच के दौरान लागू करने और पालन करने के लिए एक अनिवार्य और विस्तृत प्रक्रिया के साथ एक सुसंगत और भरोसेमंद जांच संहिता तैयार की जाए ताकि दोषी तकनीकी पहलुओं पर स्वतंत्र रूप से न चल सकें, जैसा कि वे हमारे देश में ज्यादातर मामलों में करते हैं। हमें और कुछ नहीं कहना है।

39. यह वास्तव में हैरान करने वाली बात है कि अभियोजन पक्ष के मामले में असंख्य कमजोर संबंधों और खामियों के बावजूद, निचली अदालत के साथ-साथ उच्च न्यायालय न केवल इसे अंकित मूल्य पर स्वीकार करने के लिए इच्छुक थे, बल्कि राजेश यादव और राजा यादव पर मृत्युदंड लगाने और बनाए रखने की हद तक गए थे। कोई वैध और स्वीकार्य कारण सामने नहीं रखे गए कि इस मामले को 'दुर्लभतम मामलों में से दुर्लभतम' के रूप में क्यों योग्य ठहराया गया, जिससे इस तरह की कठोर सजा की आवश्यकता है। इसके विपरीत, हम यह मानते हैं कि इस मामले में परिस्थितिजन्य साक्ष्य की श्रृंखला में जम्हाई न लेना और अंतराल अपीलार्थियों को संदेह का लाभ देकर उन्हें बरी करने की गारंटी देते हैं। परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर उन्हें उचित संदेह से परे दोषी ठहराने के लिए आवश्यक सबूत की मात्रा स्पष्ट रूप से स्थापित नहीं है।

27

राजेश और ए. एन. आर. वी. मध्य प्रदेश राज्य [संजय कुमार, जे.]

उपरोक्त विश्लेषण पर, हम अपीलार्थियों की अनुमति देते हैं और सभी मामलों में तीनों अपीलार्थियों की दोषसिद्धि और सजा को दरकिनार कर देते हैं। यदि किसी अन्य मामले के संबंध में उनके निरंतर कारावास की वैध रूप से आवश्यकता नहीं है, तो उन्हें तुरंत रिहा कर दिया जाएगा। उनके द्वारा भुगतान की गई जुर्माना राशि, यदि कोई हो, आज से आठ सप्ताह के भीतर वापस कर दी जाएगी।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

अपीलों की अनुमति दी गई।

दिव्या पांडे